MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSITY UDAIPUR-313039

SYLLABUS FOR SCREENING TEST FOR THE POST OF ASSISTANT PROFESSOR

Subject : MUSIC

Note: There shall be 100 questions with multiple Choices carrying 100 marks to be completed in 3 hrs duration.

विषय : संगीत

1. पारिभाषिक शब्दावली

नाद, श्रुति, स्वर, ग्राम–मूर्छना, जाति, राग, ताल, तान, गमक, गांधर्व–गान, मार्ग–देशी, गीति, गान, वर्ण, अलंकार, मेलोडी, हार्मनी, स्वर–सप्तक, स्वर–अन्तराल, संवाद, विवाद, उपस्वर, पाश्चात्य एवं कर्नाटक पारिभाषिक शब्दावली एवं उनका वर्णन, स्वरित (तानपुरा), अल्पत्व–बहुत्व, अविर्भाव–तिरोभाव, उठान, पेशकार, कायदा, रेला, रंग, लग्गी, लडी, फर्शबन्दी, ताल, लय, मात्रा, आर्वतन, विभाग, सःशब्द क्रिया, निःशब्द क्रिया, ठेका, सरल गत, आदि गत, चक्रदार गत, फरमाइशी गत एवं अतिरिक्त प्रकार की गतें और कायदे, उपांग, भाषांग, गति, कृति, कीर्तन, जातिस्वर, पद, स्वरजाति, रागमालिका, तिल्लाना, न्यास, अंश, प्रास, यति, अनुप्रास, अलापना, नरवल, संगति एवं अतिरिक्त पारिभाषिक शब्दावली, गीतिनाट्य, नृत्य–नाट्य, बैतालिक, वर्षा–मंगल, बसन्तोत्सव, गीतवितान, स्वर–वितान, आंकारमात्रिक स्वर–लिपि, मसीतखानी, रज़ाखानी।

2. प्रयोगात्मक शास्त्र

रागों का विस्तृत एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन, रागों का वर्गीकरण, ग्राम–राग वर्गीकरण, मेल–राग वर्गीकरण, राग–रागिनी वर्गीकरण, थाट–राग वर्गीकरण एवं रागांग वर्गीकरण, रागों का समय–सिद्धान्त, भारतीय संगीत में मेलोडी एवं हार्मनी का प्रयोग, प्रचीन, मध्य तथा आधुनिक काल में श्रुतियों पर शुद्ध–विकृत स्वरों का स्थापन।

हिन्दुस्तानी संगीत में प्रचलित तालों का विस्तृत ज्ञान, ताल के दश प्राणों एवं प्राचीन काल के मार्ग तथा देशी तालों का ज्ञान, तिहाई निर्माण के मूल सिद्धान्त, चक्रदार गत, चक्रदार परन, ताल के दश प्राणों के संदर्भ में हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक तालों का विस्तृत अध्ययन, विभिन्न लयकारियाँ—दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़, कुआड़, बियाड़ एवं उनके क्रियात्मक प्रयोग सम्बन्धित विस्तृत जानकारी।

टैगोर द्वारा हिन्दुस्तानी राग–रागिनायों का प्रयोग, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के तत्त्व, कर्नाटक संगीत, पाश्चात्य संगीत, विभिन्न प्रान्तों का संगीत, लोक संगीत और बंगाल का कीर्तन एवं टैगोर के राग–प्रयोगों में इनका प्रभाव।

3. गेय विधाएँ तथा उनका क्रमिक विकास

प्रबन्ध ,ध्रुपद, ख्याल, धमार, ठुमरी, टप्पा, तराना, चतुरंग, त्रिवट, वृन्द–गान, वृन्द–वादन, जावली, कृति, तिल्लाना, आलाप, वर्णम् (पद–वर्णम् एवं तान–वर्णम्) पदम्, रागम्, तानम्, पल्लवी, गीत, वर्ण, स्वरजाति, कल्पित, संगीत, राग–मालिका, नेरावल, स्वर–कल्पना (मनोधर्म संगीत), तेवरम्, दिव्यप्रबन्धम्, तिरूप्रूगज।

रवीन्द्र संगीत की मुख्य विधाएँ

'अकारमात्रिक' स्वरलिपि, देवनागरी लिपि का ज्ञान

बंगाल का सांगीतिक इतिहास।

4. घराना और गायकी

हिन्दुस्तानी संगीत में घराना का उद्गम और विकास एवं पारम्परिक हिन्दुस्तानी संगीत की प्रगति तथा संरक्षण में घरानों का सहयोग। घराना पद्धति के गुण–दोष।

कण्ठ, वादन और अवनद्ध के प्रमुख घरानों का अध्ययन। वर्तमान संगीत में घरानों की आवश्यकता तथा सम्भावनाएँ।

कर्नाटक संगीत की गायन और वादन की विभिन्न शैलियाँ और गुरु–शिष्य परम्परा।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के सांगीतिक सृजन का सम्पूर्ण सर्वेक्षण; टैगोर की सांगीतिक रचनाओं की स्वरात्मक एवं लयात्मक विविधताएँ (उनके निजी प्रयोगात्मक विविधताओं सहित)।

टैगोर के परिवार का सांस्कृतिक वातावरण (पथूरीयाघाट एवं जोरासाँको, कलकत्ता)

टैगोर संगीत की विषयपरक विविधताएँ (पूजा, स्वदेश, प्रेम, प्रकृति, विचित्र, अनुष्ठानिक)

5. भारतीय संगीत के शास्त्रज्ञों का योगदान एवं उनकी शास्त्रात्मक परम्परा

नारद, भरत, दत्तिल, मतंग, शारंगदेव, नान्यदेव एवं अन्य। लोचन, रामामात्य, पुंडरीक विट्ठल, सोमनाथ, दामोदर मिश्रा, अहोबल, हृदयनारायण देव, व्यंकटमखी, श्रीनिवास, पं० भातखण्डे, पं० डी० वी० पलुस्कर, पं० ओमकारनाथ ठाकुर, के० सी० डी० वृहस्पति, डा० प्रेमलता शर्मा एवं अन्य।

अवनद्य वाद्य सम्बन्धित प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक ग्रंथों–भरत नाट्यशास्त्र, संगीत समयसार, राधागोविन्द संगीत सार, मदरूल मौसीकी, भारतीय वाद्यों का इतिहास, संगीत शास्त्र, भारतीय संगीत में ताल और रूप, अभिनव ताल मंजरी, भारतीय संगीत वाद्य एवं अन्य ग्रंथ।

प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक काल के अवनद्य वाद्यों के विशेषज्ञ जैसे, कुदऊ सिंह, भगवान दास, राजा छत्रपति सिंह, आनोखे लाल, अहमद जान थिरकवा, शामता प्रसाद, किशन महाराज एवं अन्य का योगदान।

टैगोर के गीतिनाट्य एवं नृत्य–नाट्य–वाल्मीकि प्रतिभा, कालमृगया, मायार खेला, चित्रांगदा, चंडालिका, श्याम एवं अन्य जिनमें गीतों की बहुलता है। प्रायश्चित्त, विसर्जन, शरदोत्सव, राजा, फाल्गुनी, ताशेर देश, वसन्त आदि नाटक। गीतवितान, भाग 1,2,3 स्वरवितान (नोटेशन पुस्तक) भाग 1–63, संगीत चिन्ता (विश्वभारती) में टैगोर के सांगीतिक सृजन का ज्ञान।

मध्य एवं आधुनिककाल के कर्नाटक संगीत के प्रमुख शास्त्रज्ञों , रचनाकारों एवं मंचप्रदर्शक कलाकारों का योगदान।

रामामात्य, व्यंकटमखी, त्यागराज, मुत्थूस्वामी दीक्षितर, श्याम शास्त्री, गोपाल कृष्ण भारती, प्रोफेसर सम्बामूर्ति, पापानसम् शिवन, बसन्ता कुमारी, सुब्बूलक्ष्मी, रामरी, टी० एन० कृष्णन एवं अन्य।

6. संगीत के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में

प्राचीन, मध्य, एवं आधुनिककाल में हिन्दुस्तानी संगीत (कंठ, वादन, तथा अवनद्य), कर्नाटक संगीत, रवीन्द्र संगीत का ऐतिहासिक विकास।

पाश्चात्य शास्त्रज्ञों का भारतीय संगीत में योगदान।

7. सौन्दर्यशास्त्र

सौन्दर्यशास्त्र का उद्‌गम, अभिव्यक्ति और परख; सौन्दर्यशास्त्र के सिद्धान्त एवं भारतीय संगीत से सम्बन्ध।

रस सिद्धान्त एवं भारतीय संगीत में इसका प्रयोग।

हिन्दुस्तानी संगीत (कण्ठ, वादन तथा अवनद्य), कर्नाटक संगीत एवं रवीन्द्र संगीत का सांगीतिक सौन्दर्य शास्त्र तथा रस से सम्बन्ध।

राग–रागिनी चित्रों, राग ध्यान इत्यादि के विशेष सन्दर्भ में ललितकलाओं के पारस्परिक सम्बन्ध का अध्ययन।

रवीनद्रनाथ टैगोर की संदर्भ–ग्रन्थ सूची।

8. वाद्य / नृत्य

हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द्र संगीत में प्रयुक्त होने वाले वाद्य (गायन, वादन तथा अवनद्य क्षेत्र में), उनकी उत्पत्ति, विकास तथा उनके सुप्रसिद्ध कलाकार। तानपुरा तथा उसके उपस्वरों (Harmonics) का महत्त्व।

प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक काल में हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटक संगीत के वाद्यों का वर्गीकरण। रवीन्द्र संगीत में प्रयुक्त होने वाले वाद्य।

भारतीय नृत्यों की सामान्य जानकारी : कत्थक, भरतनाट्यम, कुचीपुडी, उड़ीसी, कथाकलि आदि।

9. लोक संगीत

भारतीय संगीत पर लोक संगीत का प्रभाव। लोक संगीत का रागों में शैलीगत परिवर्तन।

रवीन्द्र संगीत, हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटक संगीत की सुप्रसिद्ध लोक धुनें एवं लोक नृत्य यथा : बाउल, भटियाली, लावनी, गरबा, कजरी, चैती, भॉड, भाँगड़ा, गिद्दा, झूमर, स्वाँग, पण्डवानी, आमार प्राण मानुष आछे प्राण, आमार शोनार बांगला, कीर्तन, सारी, राय बेशे, झूमर, करकट्टम्, कवाडीअट्टम, विल्लुपोट्टु, मयण्डीमेलम् तथा अन्य प्रसिद्ध लोक विधाएँ।

हिन्दुस्तानी लोक संगीत, कर्नाटक लोक गीत अथवा दक्षिणी लोक संगीत तथा रवीन्द्र संगीत अथवा बंगाल के लोक संगीत में एक दूसरे को प्रभावीत करने वाले कारकों एवं तत्वों का विश्लेषण।

भारत के विभिन्न प्रान्तों के लोक संगीत का सामान्य अध्ययन : उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, बंगाल आदि तथा दक्षिणी भारत का लोक संगीत।

10. संगीत शिक्षण एवं शोध तकनीक

गुरु–शिष्य परम्परा, संगीत सम्प्रदाय प्रदर्शिनी, हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द्र संगीत के सन्दर्भ में विद्यालयीन संगीत शिक्षण।

हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द्र संगीत शिक्षण के सन्दर्भ में इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों एवं शिक्षण में प्रयुक्त की जाने वाली सहायक सामग्री की प्रयोगात्मकता।

हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द्र संगीत में सांगीतात्मक शोध के अन्तर्गत संक्षेपिका, सामग्री संकलन, क्षेत्रीय कार्य, प्रोजेक्ट रिपोर्ट लेखन, संदर्भ ग्रन्थ सूची,संदर्भ सामग्री आदि से सम्बन्धित शोध विधियाँ अथवा शोध प्राविधि।

शास्त्रात्मक तथा मौखिक परम्परा का संगीत में अन्तःसम्बन्ध।